नाटककार डॉ. चतुर्भुज
की स्मृति में

7 वाँ

अखिल भारतीय ऐतिहासिक

नाट्योत्सव

2016

आयोजक

मगध कलाकार एवं कला-जागरण, पटना

www.chaturbhujdrama.com, apriyadarshi76@yahoo.in

सहयोग

कला-संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार

आभार

संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली / उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद

Scanned by CamScanner

इफको का लक्ष्य यही
हो खाद का प्रयोग सही

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व

नीम लेपित यूरिया | एन पी के | डी ए पी | एन पी | बॉयो फर्टिलाइजर
वॉटर सोल्यूबल फर्टिलाइजर | माईक्रो न्यूट्रीएन्ट फर्टिलाइजर | सल्फर

Follow us :

YouTube IFFCO live
iffcolive.com

IFFCO
Wholly Owned by Cooperatives

INDIAN FARMERS FERTILISER COOPERATIVE LIMITED
IFFCO Sadan, C-1 District Centre, Saket Place, New Delhi - 110017, INDIA
Phones : 91-11-26510001, 91-11-42592626. Website : www.iffco.coop

Scanned by CamScanner

सहयोग : कला-संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार

डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में

सातवाँ अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव- 2016

बिहार, पटना

17 से 20 फरवरी, 2016

सम्पादक

सुनील कुमार सिन्हा

स्थान

कालिदास रंगालय, पूर्वी गाँधी मैदान, पटना

❖

आयोजक

मगध कलाकार एवं कला जागरण, पटना

वेबसाइट/ईमेल : www-chaturbhujdrama.com / apriyadarshi76@yahoo.in/kalajagran@rediffmail.com

Scanned by CamScanner

अध्यक्ष की कलम से

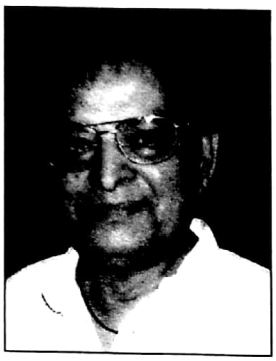

वैदिक युग से आधुनिक युग तक भारतीय इतिहास यह बताता है कि राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में बिहार का अग्रणी स्थान रहा है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में भी इसका योगदान अमूल्य एवं अतुलनीय है। वस्तुतः प्राचीन भारत का ऐतिहासिक महत्व तीन-चौथाई बिहार के इतिहास से ही जुड़ा हुआ माना जा सकता है। इसी ऐतिहासिक दस्तावेज को मूल आधार मानकर आज से सात वर्ष पूर्व हिन्दी नाट्य जगत के मूर्धन्य ऐतिहासिक नाटककार डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में प्रतिवर्ष फरवरी माह में सांस्कृतिक संस्था-'कला-जागरण' एवं 'मगध कलाकार (Magadh Artists) के संयुक्त तत्वावधान में सात दिवसीय अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव का सफलतापूर्वक आयोजन होता रहा है। खेद है, इस वर्ष का यह आयोजन चार दिवसीय है। कारण और कुछ नहीं-संसाधनों का अभाव एवं अपेक्षित अनुदान की शून्यता। फिर भी इन दोनों संस्थाओं के कार्यकारिणी समिति के निष्ठावान सदस्यों के जुनून की सराहना की जानी चाहिए जिन्होंने धनाभाव की अनदेखी करते हुए अपनी ज़िद को बरकरार रखा। इन नाट्योत्सव में भाग लेने वाले सभी नाट्यदलों के साथ-साथ सभी सुहृदजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं जिनके सद्प्रयास से हम आज यह नाट्योत्सव कर पा रहे हैं। साथ ही हम विनम्रतापूर्वक अपने सभी सुधी दर्शकों को आश्वस्त कर रहे हैं कि आगामी वर्ष (सन् 2017 ई.) में इस नाट्योत्सव का आयोजन पूर्व की भाँति सात दिवसीय ही होगा और वह माह अगस्त 2017 ई. होगा।

इस वर्ष के नाट्योत्सव का आरम्भ हिन्दी नाटक के प्रख्यात नाटककार एवं समीक्षक डॉ. (प्रो0) सिद्धनाथ कुमार के बहुचर्चित नाटक 'अशोक' के प्रथम प्रदर्शन से होने जा रहा है। यह भी एक इतिहास ही होगा कि 'अशोक' नाटक का प्रदर्शन पहली बार ऐतिहासिक नाट्योत्सव में स्वनामधन्य वरिष्ठ रंगकर्मी श्री अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा द्वारा पूर्वाभ्यास का कुशल संचालन एवं वरिष्ठ रंग-निर्देशक श्री सुमन कुमार के निर्देशन में प्रस्तुत होगा। इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका के प्रकाशन के लिए डॉ. अशोक प्रियदर्शी का दायित्व-निर्वहन प्रशंसनीय एवं स्तुत्य है।

अपने सभी सुधी दर्शकों से इस नाट्योत्सव की सफलता के लिए उनकी गरिमामयी उपस्थिति के साथ-साथ आशीर्वाद की कामना करते हैं।

गणेश प्रसाद सिन्हा
अध्यक्ष, कला-जागरण

प्रकाशक
कला-जागरण : **गणेश प्रसाद सिन्हा**, अध्यक्ष
C/11, कंकड़बाग कॉलोनी, पटना-20
(मो. 09431622131)
: **सुमन कुमार, सचिव**
सुन्दरी भवन, देवी स्थान, बंगाली टोला,
पूर्वी मीठापुर फार्म, पटना-1 (मो. 9431066931)

ले-आउट डिजाइन : **फकीर मुहम्मद**

मुद्रक : **वातायन मीडिया एण्ड पब्लिकेशंस प्रा.लि.**
अयोध्या अपार्टमेंट (बोर्ड ऑफिस के सामने)
फ्रेजर रोड, पटना-800 001
9431040914/2222920
vatayanprabhat@gmail.com

मगध कलाकार : **डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र**, अध्यक्ष
सेवानिवृत्त निदेशक, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्,
शिवपूजन सहाय पथ, सैदपुर
पटना-800 004
(मो. 09430212579)
: **डॉ. अशोक प्रियदर्शी, सचिव**
क्वार्टर नं.-106, रोड नं.-6,
श्रीकृष्ण नगर, पटना-800 001
(मो. 09334525657)

Scanned by CamScanner

राम नाथ कोविन्द
राज्यपाल, बिहार

सत्यमेव जयते

राजभवन, पटना– 800022
दूरभाष : 0612–2217626
फैक्स : 0612–2786184

7 जनवरी, 2016

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि 'कला जागरण' (पटना) नामक सांस्कृतिक संस्था के तत्वावधान में '7वाँ अखिल भारतीय नाट्य महोत्सव-2016' आगामी 17 से 19 फरवरी, 2016 के दौरान कालिदास रंगालय, पटना में आयोजित होने जा रहा है।

आशा है, इस आयोजन से राज्य में सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रति लोकरुचि बढ़ेगी और कलाकारों को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

मैं इस 'नाट्य महोत्सव' की समग्र सफलता की मंगलकामना करता हूँ।

रामनाथ कोविन्द

(राम नाथ कोविन्द)

Scanned by CamScanner

राजीव प्रताप रुडी
Rajiv Pratap Rudy

सत्यमेव जयते

कौशल विकास और उद्यमशीलता राज्यमंत्री
(स्वतंत्र प्रभार), एवं
संसदीय कार्य राज्य मंत्री, भारत सरकार
MoS Skill Development & Entrepreneurship
(Independent Charge) &
Parliamentary Affairs, Government of India

18 जनवरी, 2016

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि **'मगध कलाकार'** द्वारा डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में सातवें अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है तथा इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है, जो एक सराहनीय प्रयास है।

मुझे विश्वास है कि इस नाट्य उत्सव में नाटकों के माध्यम से लोगों को सरकार की कौशल विकास जैसी जनकल्याणकारी योजनाओं की भी जानकारी दी जाएगी।

मैं **'मगध कलाकार'** द्वारा आयोजित नाट्य महोत्सव की सफलता व स्मारिका के प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(राजीव प्रताप रुडी)

Office : 2nd Floor, Shivaji Stadium Annexe, Shaheed Bhagat Singh Marg, New Delhi-110001
Tel. : 23450811, Fax : 23450864
Room No. 56, Parliament House, New Delhi-110001, Tel. : 011-23010895, 23034638, Fax : 23011824
Residence : AB-97, Shahjahan Road, New Delhi-110011, Phone : 011-23070300, 23070999 (Telefax)

Scanned by CamScanner

शिवचन्द्र राम
मंत्री
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

विकास भवन, नया सचिवालय
बेली रोड, पटना-800015
दूरभाष : 0612-2215688 (का॰)
मो॰ : 09431018339

पत्रांक : .....

दिनांक : 20.01.2016

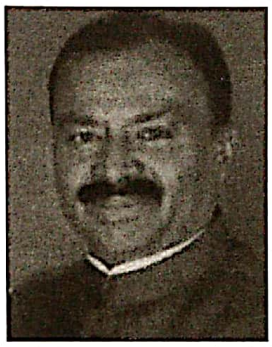

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत ही प्रसन्नता का विषय है कला जागरण, पटना के द्वारा सातवां अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव-2016 का आयोजन दिनांक 17 से 19 फरवरी, 2016 को कालिदास रंगशाला, पटना में किया जा रहा है। इस अवसर पर स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय लिया गया है, जो अभिनंदन योग्य है।

'कला जागरण' ने नाटक के जरिए समाज में सांस्कृति मूल्यों एवं कला के विभिन्न रूपों को जीवित रखते हुए विगत कई वर्षों से अनवरत नाट्य प्रदर्शन जारी रखा है, जो प्रशंसनीय है। मेरा विश्वास है कि भविष्य में भी 'कला जागरण' अपने सकारात्मक प्रयासों को न सिर्फ जारी रखेगा वरन् उन्हें और नए आयाम देगा।

मैं कला जागरण सांस्कृतिक संस्था के सभी सदस्यों तथा स्मारिका के सम्पादन से जुड़े हर व्यक्ति को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

18/01/2016

(शिवचन्द्र राम)

Scanned by CamScanner

विवेक कुमार सिंह, भा.प्र.से.
प्रधान सचिव
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

विकास भवन, पटना-800015
फोन : 0612-2211619 (ऑफिस)
: 0612-2230173 (फैक्स)
ई-मेल : Secart-bih@nic.in

पत्रांक : .....

दिनांक : .....

शुभकामना संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि कला जागरण संस्था द्वारा दिनांक 17 से 19 फरवरी, 2016 तक सातवें अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव-2016 का आयोजन पटना में किया जा रहा है।

मैं इस महत्वपूर्ण आयोजन की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

25.1.16

(विवेक कुमार सिंह)
प्रधान सचिव,
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

Scanned by CamScanner

संक्षिप्त परिचय

नाटककार डॉ. चतुर्भुज

नाम : डॉ चतुर्भुज
जन्म तिथि : 15/01/1928 ई. महाप्रयाण : 11/08/2009 ई.
जन्म स्थान : मुहल्ला- महलपर,
बिहार शरीफ, जिला-नालन्दा
शिक्षा : (क) एम.ए. (पालि और बौद्ध साहित्य में)
(ख) पी-एच.डी., (शोध विषय- 'प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटक और प्राचीन यूनानी नाटक- एक अध्ययन')
पिता : स्व. मुंशी प्रयाग नारायण
वेबसाइट : www.chaturbhujdrama.com

मगध कलाकार का पता : रोड नम्बर-06, क्वाटर नम्बर-106, श्री कृष्ण नगर, पटना-800001 (बिहार) फोन : 9334525657

उपलब्धियाँ

1. डॉ. चतुर्भुज का जन्म बिहार में हुआ। इन्होंने अपने जीवन के इक्यासी बसंत देखे। सारा जीवन उन्होंने हिन्दी के माध्यम से नाट्य-लेखन, प्रस्तुतिकरण, निर्देशन, मंचन, अभिनय कला के प्रचार-प्रसार में लगा दिया। सम्पूर्ण जीवनकाल में हिन्दी के माध्यम से नाट्यकला के विकास में प्रयत्नशील रहे। नाटक के अलावा अन्य ग्रन्थों की रचना भी इन्होंने की है।
2. विभिन्न संदर्भ ग्रन्थों में इनचके कार्यों और उपलब्धियों का उल्लेख आया है। जैसे:- साहित्य अकादमी के 'हूज हू' में, डॉ. दशरथ ओझा के 'हिन्दी नाटक कोश' में, डिस्टिंगयूइस्ड यूथ ऑफ इन्डिया 'हूज हू' (पृष्ठ-146) में, 'बायोग्राफी इन्टरनेशनल' में, 'एशिया पेसेफिक हूज हू' में, 'एशियन अमेरिकन हूज हू' में, लर्नेड एशिया' में, तथा अनेक संदर्भ ग्रन्थों में इनके नाम का और इनकी उपलब्धियों का उल्लेख है। 'रेफरेन्स एशिया' में इनके बारे में विस्तार से उल्लेख है जिसमें एशिया के चुने हुए लगभग 1500 व्यक्ति ही सम्मिलित किये गये हैं। इनके अलावा नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली से प्रकाशित और डॉ. प्रतिभा अग्रवाल द्वारा सम्पादित 'रंगकोश' के दोनों खंडों में डॉ. चतुर्भुज का उल्लेख किया गया है। नौवीं कक्षा के लिए बिहार टेक्स्ट बुक कमिटि द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'वर्णिका' के 'बिहार की नाट्यकला' अध्याय में डॉ. चतुर्भुज का नाटक में योगदान पर प्रकाश डाला गया है।
3. नाटक और थियेटर के प्रति डॉ. चतुर्भुज के योगदान पर अनेक विद्वानों ने एम.फिल. और पी-एच.डी. (कर्नाटक विश्वविद्यालय, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, मगध विश्वविद्यालय आदि) के लिए शोध कार्य किया। कर्नाटक में एक विद्वान को डॉ. चतुर्भुज के पौराणिक नाटकों पर शोध करने में पी-एच.डी. की डिग्री से सम्मानित किया जा चुका है।

रंगमंच :-

4. डॉ. चतुर्भुज की मान्यता थी कि नाटक सिर्फ एक विधा ही नहीं है बल्कि इसमें साहित्य, कला, विज्ञान सभी कुछ है। अर्थात् अभिव्यक्ति का यह सबसे सशक्त और समन्वित माध्यम है। जब नाटक लिखा जाता है तब यह साहित्य है, तैयारी के समय इसमें विभिन्न कलायें जुड़ती हैं और मंचन के दौरान प्रकाश, ध्वनि, मेकअप, सेट निर्माण आदि विज्ञान विषयक बातें आती हैं। डॉ. चतुर्भुज ने अपने पूरे जीवन में इन विषयों का मनन किया है और इसे व्यवहार में भी वे लाते रहे।
5. नाटक को पंचम वेद की संज्ञा देने के बाद भी हिन्दी की उपेक्षित विधा नाटक और रंगमंच है। डॉ. चतुर्भुज ने साहित्य और कला के रूप में इसे समृद्ध किया। इसे रोजी-रोटी से जोड़ कर बेरोजगारों को एक नई दिशा दी। इसी उद्देश्य से संघर्ष करते हुए उन्होंने ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में एम.ए. स्तर पर नाट्यशास्त्र एक स्वतन्त्र विषय के रूप में प्रारम्भ कराया। सरकारी सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद वे वहां प्रथम नाट्य शिक्षक के रूप में ढाई साल तक सेवारत रहे। आगे चल कर इन्होंने इन्टरमीडिएट स्तर पर नाटक को एक स्वतन्त्र विषय के रूप में स्वीकृति प्रदान कराई।

Scanned by CamScanner

6. डॉ. चतुर्भुज का प्रयास स्मरणीय माना जायेगा कि उन्होंने बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर जी से मिल कर बिहार में नाट्य प्रदर्शन पर लग रहे मनोरंजन कर को समाप्त कराया और बिहार में नाट्य प्रदर्शन, मनोरंजन-कर से मुक्त हुआ। इससे हिन्दी रंगकर्मियों को काफी लाभ हुआ है।
7. सन् 1952 ई. में डॉ. चतुर्भुज ने हिन्दी और रंगमंच के प्रचार-प्रसार के लिए मगध कलाकार (MAGADH ARTISTS) सांस्कृतिक संस्था की स्थापना की और प्रमुख रूप से ग्रामीण अंचलों में हिन्दी में नाट्य प्रदर्शन किये। आज के लोग ग्रामीण अंचलों में जाना नहीं चाहते। डॉ. चतुर्भुज इसके अपवाद थे। इनके नाम से ग्रामीण अंचलों के सभी बड़े-छोटे रंगकर्मी परिचित हैं।
8. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे रंगकर्मी रहे जिन्होंने पारसी युग के नाटकों में अभिनय, निर्देशन करते हुए हिन्दी युग के नाटकों को एक नई दिशा देने का सफल प्रयास किया। उन्होंने हिन्दी नाट्य लेखन में एक नई शैली दी। इतिहास में छिपे चरित्रों और घटनाओं को नाटक के माध्यम से युवा वर्ग को परिचित कराने का सफल प्रयास किया। उन्होंने पारसी युग से बढ़ते हुए आज के नुक्कड़ नाटकों और टैरिस (Terrace) थिएटर तक का एक लम्बा सफर तय किया था।
9. डॉ. चतुर्भुज ने लगभग 300 से अधिक हिन्दी नाट्य प्रदर्शनों में लेखक, निर्देशक, अभिनेता के रूप में भाग लिया। इन प्रदर्शनों से हिन्दी का बड़ा प्रचार-प्रसार हुआ।
10. फिल्म और रंगमंच के चर्चित कलाकार पृथ्वीराज कपूर उनके नाटक 'कलिंग-विजय' को देखने के लिए स्वयं अपने रंगकर्मियों के साथ बख्तियारपुर (पटना जिला) आये थे। उन्होंने डॉ. चतुर्भुज की लगनशीलता देख उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। बम्बई लौटने के बाद भी डॉ. चतुर्भुज के साथ श्री कपूर का सम्बन्ध बना रहा।
11. नव नालन्दा महाविहार के प्रांगण में आयोजित कॉन्वोकेशन (1977) और द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन (1980) में डॉ. चतुर्भुज ने अपनी संस्था के कलाकारों द्वारा बौद्ध ग्रंथ 'दिव्यावदान' के कुणालावदान की कथा पर आधारित ऐतिहासिक नाटक 'पाटलिपुत्र का राजकुमार' का मंचन कराया। उस अवसर पर कई देशों के बौद्ध विद्वानों के साथ आस्ट्रेलिया के इतिहासकार डॉ. ए. एल. बाशम और बौद्ध विद्वान भदन्त आनन्द कौसल्यायन भी उपस्थित थे। नाटक देखकर उन विद्वानों के साथ अन्य दर्शक भावुक थे।
12. अपनी सांस्कृतिक संस्था 'मगध कलाकार' के माध्यम से डॉ. चतुर्भुज ने न सिर्फ हिन्दी रंगमंच को गौरवान्वित किया था बल्कि नाट्य प्रदर्शन के माध्यम से अर्जित राशि एकत्रित कर अनेक सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाओं और सरकार को प्रदान कर गौरव प्राप्त किया था। वे कुछ प्रमुख सरकारी एवं गैरसरकारी सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाएं हैं- एस.यू. कॉलेज, हिलसा/ जमुई में स्थापित स्टेडियम/ रांची समाज कल्याण समिति/ मुख्यमंत्री बाढ़ राहत कोष/ महिला महाविद्यालय, खगौल/ प्रधानमंत्री बाढ़ राहत कोष/ राष्ट्रीय सुरक्षा कोष आदि।
13. अपनी संस्था के कलाकारों और बौद्ध भिक्षुओं का दल लेकर डॉ. चतुर्भुज ने बिहार का प्रतिनिधित्व करते हुए राजधानी दिल्ली के गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर 1957 ई. में प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय की झांकी प्रस्तुत की और पुरस्कृत हुए। पटना के गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर झांकियों का प्रदर्शन इनके प्रयास से ही सन् 1979 ई. से आरम्भ किया गया जो आजतक गतिशील है।
14. सरकारी सेवा से निवृत्त होने के दस वर्षों के बाद डॉ. चतुर्भुज ने मगध विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की डिग्री प्राप्त की थी। इनके शोध का विषय था- 'प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटक और प्राचीन यूनानी नाटक-एक अध्ययन'।
15. हिन्दी को रंगमंचीय दृष्टि से समृद्ध करने के लिए उन्होंने दो प्राचीन श्रेष्ठ संस्कृत नाटकों का हिन्दी रंगमंचीय रूपान्तर करके सफलतापूर्वक उन्हें मंचित किया। ये नाटक हैं- 'शकुन्तला' और 'मुद्राराक्षस'।
16. उत्तर-दक्षिण की सांस्कृतिक एकता पर आधारित इनका साहित्यिक हिन्दी मौलिक नाटक 'रावण' पटना के कालिदास रंगालय के मंच पर लगातार तीन माह तक छुट्टियों के दिन मंचित होता रहा। उसे काफी प्रशंसा मिली। यह नाटक मील का पत्थर साबित हुआ। इस नाटक से प्रभावित होकर बिहार आर्ट थिएटर के संस्थापक निदेशक अनिल कुमार मुखर्जी ने इसका बंगला अनुवाद किया।

Scanned by CamScanner

कालान्तर में रावण नाटक का मैथिली अनुवाद युवा पत्रकार लक्ष्मी कान्त सजल ने किया। अंग्रेजी अनुवाद का श्रेय बिहार सरकार के पदाधिकारी कुमार शांत रक्षित को जाता है। भाषा संगम, इलाहाबाद के महासचिव डॉ. एम. गोविन्द राजन ने इस नाटक का तमिल भाषा में अनुवाद किया जिसका प्रकाशन चेन्नई से किया गया। बंगला भाषा और अंग्रेजी भाषा में अनूदित रावण नाटक के प्रकाशन की प्रतीक्षा पाठकों में बनी है।

17. डॉ. चतुर्भुज के अन्य कई ऐतिहासिक नाटकों का मैथिली और अंग्रेजी में अनुवाद किया जा चुका है जिनका प्रकाशन अभी नहीं हो पाया है।

नाट्य-लेखन :-

18. हिन्दी में रंगमंचीय नाटकों का अभाव देख डॉ. चतुर्भुज ने नाट्य-लेखन की ओर अपना कदम बढ़ाया। उनका पहला नाटक था- मेघनाद। नाट्य प्रदर्शन की सफलता के बाद अन्य रंगकर्मियों की मांग पर उन्होंने इसका प्रकाशन किया। फिर तो नाट्य-लेखन, प्रदर्शन के बाद प्रकाशन की ओर उन्हें कदम बढ़ाना अनिवार्य हो गया। हर रंग संस्थाओं की मांग होती दशहरे के मौके पर डॉ. चतुर्भुज लिखित कोई नवीनतम नाटक अभिनीत हो।
19. डॉ. चतुर्भुज का लेखन भारत विभाजन से पूर्व ही प्रारम्भ हो चुका था। उनकी कहानियाँ, लेख, संस्मरण आदि का प्रकाशन उन पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे थे जो पत्रिकाएं आज या तो बन्द हो गयी हैं अथवा भारत विभाजन के बाद इन दिनों वे पत्रिकाएं पाकिस्तान क्षेत्र में चली गई हैं। उस समय की चर्चित पत्र-पत्रिकाएं रही हैं- विश्वमित्र (कलकत्ता), लक्ष्मी (लाहौर), ज्योत्स्ना, हिन्दुस्तान, धर्मयुग, नवनीत, सत्यकथा आदि।
20. डॉ. चतुर्भुज के प्रकाशित रंगमंचीय नाटकों की संख्या चालीस से अधिक हैं। रेडियो-टेलिविजन के लिए भी इन्होंने सैकड़ों नाटक और रूपक लिखे। 'बाबू विरंचीलाल' नामक टेलीफिल्म का निर्माण भी किया।
21 उत्तर-प्रदेश की सरकार ने डॉ. चतुर्भुज को उनकी एक नाट्य पुस्तक (मीरकासिम) पर पुरस्कृत किया है। केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी, राजस्थान सरकार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय (संस्कृत), बिहार राजभाषा विभाग आदि ने इनके हिन्दी नाटकों के प्रकाशन के लिए समय-समय पर आर्थिक अनुदान दिये हैं।
22. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे नाटककार रहे जिन्होंने विदेशी चरित्रों को अपने नाटकों में स्थान दिया। वे चरित्र ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में काफी लोकप्रिय रहे। उनके नाटकों में अंग्रेज, फ्रेंच, इटैलियन, ग्रीक, चीनी आदि चरित्र रहे हैं। चरित्रों को सजीव बनाने के लिए उन्हें संबन्धित देश के दूतावासों से बराबर सम्बन्ध बनाये रखना पड़ा था।
23. डॉ. चतुर्भुज के चुने हुए पौराणिक, ऐतिहासिक और सामाजिक रंगमंचीय नाटकों का संग्रह तीन खंडों में 'चतुर्भुज रचनावली' दिल्ली से समय प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। इनकी कुल पृष्ठ संख्या लगभग 1500 है।
24. समय प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित 'भारतीय और विदेशी भाषाओं के नाटकों का इतिहास' डॉ. चतुर्भुज की उल्लेखनीय पुस्तक कही जायेगी जिसमें उन्होंने प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटकों के अलावा यूनानी, अंग्रेजी, फ्रेंच, अमेरिकन, रूसी, जर्मन, इटैलियन, चीनी, जापानी, भाषाओं के नाटकों का इतिहास भी है। हिन्दी में इस प्रकार का यह पहला ग्रन्थ है जिसमें इतनी भाषाओं के नाटकों का इतिहास एक स्थल पर उपलब्ध है। इसके लेखन में विदेशी दूतावासों ने भी सामग्री और चित्र दिये हैं।
25. अपने जीवन के अन्तिम समय में डॉ. चतुर्भुज रंगकर्म के व्यवहारिक पक्ष को ध्यान में रखकर एक पुस्तक लिख रहे थे- 'नाट्य-शिल्प-विज्ञान'। सात अध्याय का लेखन हो चुका था कि अकस्मात उनकी असामयिक मृत्यु हो गई। पुस्तक अधूरी है। लेकिन उसके प्रकाशन की योजना बन रही है ताकि रंगकर्मी उस पुस्तक से लाभान्वित हो सकें।
26. इतिहास डॉ. चतुर्भुज का प्रिय विषय रहा था। यही मूल कारण है कि उन्होंने इतिहास विषयक चरित्रों को नाटक के माध्यम से सजीव किया। नाट्य लेखन के साथ ही उन्होंने तीन ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की। **'समुद्र का पक्षी'** ऐतिहासिक उपन्यास इटैलियन यायावर मनूची के जीवन चरित्र पर आधारित है जिसने शिवाजी और औरंगज़ेब के युद्ध को अपनी आंखों से देखा था और उसने स्वयं उसमें भाग भी लिया था। दूसरा उपन्यास **राजदर्शन** है। यह उपन्यास मुंगेर के नवाब मीर कासिम के चरित्र पर आधारित

Scanned by CamScanner

है जिसने अल्पकाल के शासनकाल में ही इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया था। तीसरा उपन्यास है भगवान बुद्ध के गृह-त्याग से लेकर उनके परिनिर्वाण तक की घटनाओं पर आधारित- **'तथागत'**। इन उपन्यासों में तात्कालिक सामाजिक, राजनीतिक घटनाओं का सजीव चित्रण है।

27. जहाँ एक ओर 1857 के वीर सेनानी पीरअली, कुंवरसिंह, झांसी की रानी, बहादुरशाह जैसे नाटकों में डॉ. चतुर्भुज ने हिन्दु-मुस्लिम एकता और सर्वधर्म समन्वय को दर्शाने का सफल प्रयास किया है, वहीं अरावली का शेर, भीष्म-प्रतिज्ञा, शिवाजी, सिकन्दर-पोरस, टीपू सुल्तान में भारतीय इतिहास और संस्कृति को गौरवान्वित किया है। दूसरी ओर उनके नाटक कलिंग-विजय, पाटलिपुत्र का राजकुमार, प्रतिशोध, आदि में बौद्ध धर्म की घटनाएं सजीव रूप से चित्रित हुई हैं।

28. डॉ. चतुर्भुज लिखित उनकी आत्मकथा **'मेरी रंगयात्रा'** शीर्षक से समय प्रकाशन, नई दिल्ली से उनके मरणोपरान्त प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में उन्होंने अपने संघर्षमय जीवन के अनछुए पहलुओं का उल्लेख करते हुए बताया है कि नाटक और रंगमंच उनके जीवन की प्रतिछाया बना रहा।

बौद्ध साहित्य और दर्शन :-

28. आर्थिक अभाव के कारण डॉ. चतुर्भुज ने कभी कॉलेज का मुंह नहीं देखा। लेकिन पढ़ने की ललक उनमें लगातार बनी रही। परिवार के जीवन-यापन हेतु उन्होंने छोटी-छोटी कई नौकरियां की और फिर बख्तियारपुर-राजगीर तक चलने वाली मार्टिन कम्पनी की छोटी लाइन रेलवे की नौकरी स्वीकार की। प्राईवेट से ही उन्होंने आई.ए. और बी.ए. की परीक्षाएं पास की। बख्तियारपुर-राजगीर रेलवे में ड्यूटी करते हुए उनकी भेंट अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त बौद्ध विद्वान भिक्षु जगदीश कश्यप जी से हुई। वे उस समय भारत सरकार से अनुदान प्राप्त कर, बौद्ध त्रिपिटक के देवनागरीकरण करने और उनके सम्पादन के कार्य में लगे थे। डॉ. चतुर्भुज ने उनके मार्ग-दर्शन में बौद्ध साहित्य का अध्ययन किया। उन्होंने एम.ए. की परीक्षा पास की। बौद्ध साहित्य और दर्शन का उन्हें ज्ञान मिला। फिर रेलवे की नौकरी छोड़ डॉ. चतुर्भुज जुड़ गये नव नालन्दा महाविहार से। देश-विदेश के नामी बौद्ध विद्वानों के साथ रहकर त्रिपिटक-सम्पादन-विभाग में चार साल तक पालि ग्रन्थों का देवनागरी में सम्पादन कार्य किया। यह हिन्दी और देवनागरी की विशिष्ट सेवा है। बौद्ध विषयक उनके अनेक नाटक और लेख प्रकाशित और प्रसारित हुए।

आकाशवाणी सेवा :-

29. संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से डॉ. चतुर्भुज का चयन आकाशवाणी में कार्यक्रम अधिशासी (Programme Executive) के पद पर सन् 1959 में हुआ।

30. आकाशवाणी की सेवा करते हुए उन्होंने पटना, राँची, भागलपुर और दरभंगा क्षेत्रों में रहकर हिन्दी साहित्य और रंगमंच की सेवा की। आकाशवाणी के लिए उन्होंने अनेक रेडियो नाटक, रेडियो फीचर और बौद्ध साहित्य पर आधारित अनेक वार्त्ताएं लिखीं। कई रेडियो नाटकों और फीचरों का प्रसारण अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न भाषाओं में विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित हुए। सन् 1986 ई. में आकाशवाणी, दरभंगा से केन्द्र निदेशक के पद को सुशोभित करते हुए वे सेवा निवृत्त हुए। उनके प्रमुख रेडियो नाटक और फीचर रहे हैं- गणतन्त्र की भूमि वैशाली, पलासी का धूमकेतू, नेत्रदान, लाल कुंवरी, सफेद हाथी, अवन्ती की राजकुमारी, तलवारों के साये में, नव नालन्दा महाविहार, कलम के जादूगर रामबृक्ष बेनीपुरी, मिलिन्द-प्रश्न, पाटलिपुत्र का राजकुमार, बैकठपुर का शिवमंदिर, पाटलिपुत्र से पटना तक, बाजीराव-मस्तानी, झेलम के किनारे, जहाँआरा, हैदरअली, रेडियो नाट्य शृंखला के अन्तर्गत जातक कथा पर आधारित तेरह धारावाहिक नाटक आदि।

पुरस्कार/सम्मान :-

31. 1998 ई. में अनिल कुमार मुखर्जी शिखर सम्मान, सन् 2000 में दिल्ली में आयोजित शताब्दी विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी सेवा के लिए डॉ. चतुर्भुज को शताब्दी सम्मान से सम्मानित किया गया, सन् 2004 ई. में राष्ट्र गौरव-राष्ट्रकवि दिनकर सम्मान से सम्मानित, श्री चित्रगुप्त आदि मंदिर प्रबन्धक समिति द्वारा हिन्दी नाटक में विशिष्ट योगदान हेतु सन् 2004 ई. में सम्मान, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ने उन्हें वयोवृद्ध साहित्यकार के रूप में सन् 2004 ई. में सम्मानित किया। 'मीरकासिम' नाट्य-लेखन पर

Scanned by CamScanner

उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत, साहित्कार-सम्मान- समिति द्वारा उन्हें नाटक एवं रंगमंच के लिए सम्मान, इसी तरह और भी अनेक संस्थाओं ने उनके नाट्य-लेखन, रंगमंच के प्रति समर्पित, हिन्दी सेवा आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य हेतु सम्मानित किया है।

पत्रकारिता :-

32. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे प्रतिभाशाली लेखक-रंगकर्मी और प्रशासक रहे जिन्होंने अपने अनुभवों से, आगे की पीढ़ियों को लाभान्वित किया। सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्त करने के बाद उन्होंने ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में प्रथम नाट्य शिक्षक के रूप में सेवा की। पटना आकर एक ओर वे यूनेस्को से मान्यता प्राप्त 'नाट्य-प्रशिक्षणालय', पटना में रंगकर्मियों को पारसी थियेटर की शिक्षा देते रहे, वहीं दूसरी ओर डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हा पत्रकारिता और जन-संचार, डॉ. जाकिर हुसैन पत्रकारिता और जन-संचार के छात्रों को भी रेडियो-पत्रकारिता और दूरदर्शन-पत्रकारिता की शिक्षा देते रहे। अपने जीवन-काल में डॉ. चतुर्भुज जहां भी रहे, रंगकर्मियों, पत्रकारिता और जन-संचार के छात्रों को शिक्षित ही करते रहे। उनके आवास पर भी लोगों का आगमन लगातार जारी रहा। सम्भवत: उनकी सहृदयता और उनके ज्ञान का सागर देखकर ही लोग उन्हें गुरुजी कहकर संबोधित करते रहे और रंगकर्मियों के बीच वे नाटक के भीष्म-पितामह कहे जाते रहे।
33. तत्कालीन लोकप्रिय पत्र-पत्रिका विश्वमित्र, ब्लिज, प्रदीप, आर्यावर्त्त, इंडियन नेशन के नालंदा के स्थानीय संवाददाता।

चतुर्भुज-साहित्य

रंगमंचीय नाटक :-

पाटलिपुत्र का राजकुमार, कलिंग-विजय, सिकन्दर-पोरस, कालसर्पिणी, टीपू सुल्तान, रावण, मेघनाद, कंसवध, श्रीकृष्ण, कर्ण, भीष्म-प्रतिज्ञा, बन्द कमरे की आत्मा, नदी का पानी, भगवान बुद्ध, बाबू विरंचीलाल, मुद्राराक्षस, अरावली का शेर, नूरजहां, शिवाजी, सिराजुद्दौला, मीरकासिम, कृष्ण कुमारी, पीरअली, झांसी की रानी, कुंवर सिंह, मोर्चे-पर, बहादुरशाह, शाही अमानत, विजय के क्षण, बादल का बेटा, महिषासुर वध, कारागार, चतुर्भुज रचनावली (तीन खंडों में)।

उपन्यास/कथा संग्रह:-

समुद्र का पक्षी- (मनूची के जीवन पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास), राजदर्शन- (मुंगेर का नवाब मीरकासिम के जीवन पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास), **तथागत**- (भगवान बुद्ध के गृह-त्याग से उनके परिनिर्वाण तक की घटनाओं पर आधारित) इतिहास बोल उठा-(खोजपूर्ण ऐतिहासिक लेख संग्रह), कमरे की छाया-(उल्लेखनीय कहानी-संग्रह) मेरी रंगयात्रा (आत्मकथा)- डॉ॰ चतुर्भुज के संघर्षमय जीवन की कथा।

इतिहास :-

औरंगज़ेब, भारत के बौद्ध विहार, प्रमुख भारतीय और विदेशी भाषाओं के नाटकों का इतिहास।

अंग्रेजी/ मैथिली/तमिल ग्रन्थ :-

Memoirs of William Tayler (Commissioner of Patna in 1857), History of the Great Mughals, The Rani of Jhansi (Drama), The Great Historical Dramas, रावण (मैथिली और तमिल अनुवाद नाटक)।

अप्रकाशित- नाट्य शिल्प विज्ञान (हिन्दी), Raavan, Shri Krishn, Kans-Vadh, Pataliputra Ka Rajkumar, Peer Ali (Translated in English)●

Scanned by CamScanner

मगध कलाकार (MAGADH ARTISTS) की ओर से डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में दिये जाने वाले सम्मान

मगध कलाकार और बिहार आर्ट थियेटर के सौजन्य से डॉ चतुर्भुज शिखर सम्मानः-

सन् 2010 : डॉ. जितेन्द्र सहाय- शल्य चिकित्सक और नाटककार
बेस्ट एक्टर : श्री अखिलेश्वर प्र. सिन्हा, **बेस्ट एक्ट्रेस** : श्रीमती सुचित्रा सिन्हा।

सन् 2011 : श्री गोपाल शरण- रंगमंच, रेडियो और फिल्म के कलाकार
बेस्ट एक्टर : श्री नन्दलाल सिंह **बेस्ट एक्ट्रेस** : सुश्री उज्ज्वला गांगुली, **श्रेष्ठ निर्देशक** : उपेन्द्र कुमार

सन् 2012 : श्री कृष्णानन्द- ऐतिहासिक उपन्यासकार, वरिष्ठ पत्रकार और नाट्य समीक्षक
बेस्ट एक्टर : श्री अमित श्रीवास्तव, **बेस्ट एक्ट्रेसः** श्रीमती अनीता कुमारी वर्मा

सन् 2013 : श्री गणेश सिन्हा-नाट्य निर्देशक, अभिनेता, और रंग-परामर्शी।
बेस्ट एक्टर : श्री राजवर्द्धन, **बेस्ट एक्ट्रेस** : सुश्री सविता श्रीवास्तव

सन् 2014 : श्री बच्चन लाल- अभिनेता, मेकअप मैन,

सन् 2015 : श्री रामदास राही- स्व. भिखारी ठाकुर के परिजन जिन्होंने भिखारी ठाकुर की अनमोल रचनाओं को संरक्षित रखा। **बेस्ट ऐक्टर**-कुणाल कौशल, **बेस्ट ऐक्ट्रेस**- पूजा कुमारी

मगध कलाकार की ओर से दो वर्षों के लिए डॉ. चतुर्भुज छात्रवृत्ति सम्मानः-

सन् 2010 : श्री अमित गुप्ता : श्रीमती रंजीता जयसवाल,

सन् 2011 : श्री सुनील कुमार सिंह, सुश्री साक्षी प्रिया,

सन् 2012 : श्रीमती पुष्पा कुमारी, श्री राहुल कुमार

सन् 2013 : श्रीमती पुष्पा कुमारी, मो. आसिफ इकबाल

सन् 2014 : सुश्री मारिया प्रवीण, विशाल कुमार तिवारी

सन् 2015 : सुश्री कनीज फातिमा, श्री उदित कुमार

सन् 2016 : सुश्री कमल प्रिय, श्री श्याम बिहारी ठाकुर

मगध कलाकार और कला-जागरण की ओर से डॉ. चतुर्भुज नाट्य-पत्रकारिता सम्मान

सन् 2012 : **श्री आशीष कुमार मिश्र**- रंगकर्मी और पत्रकार, दैनिक हिन्दुस्तान, पटना।

सन् 2013 : **श्री दीनानाथ साहनी**- लेखक, पत्रकार और रंग समीक्षक, दैनिक जागरण, पटना।

सन् 2014 : **श्री ध्रुव कुमार**- रंगकर्मी, लेखक, स्वतन्त्र पत्रकार।

सन् 2015 : **श्री साक़िब इक़बाल खाँ**- रंग-पत्रकार, दैनिक भास्कर, पटना।

सन् 2016 : **श्री रविराज पटेल**- संस्थापक-सचिव, सिनेयात्रा/लेखक, पत्रकार, व्याख्याता, एस.ए.ई. कॉलेज, जमुई।

Scanned by CamScanner

आयोजन समिति

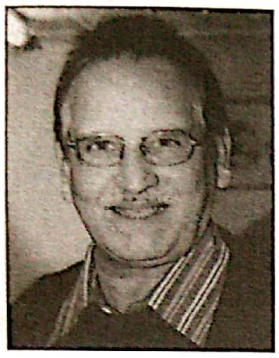

सुमन कुमार

सचिव, कला-जागरण, पटना

09431066931

वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार का नाम रंग-क्षेत्र में कोई नया नहीं है। इन्होंने स्वीकार किया है कि रंगमंच ही मेरे जीने का मकसद है। आकाशवाणी, पटना के वरीय उद्घोषक रहे श्री कुमार, सरकारी सेवा से निवृत्त होने के बाद अभिनय, निर्देशक, संयोजक, कोरियोग्राफर आदि विद्या में और भी सक्रिय हो गये। अपनी अभिनय क्षमता के बल पर इन्होंने रिचर्ड एटनबरो की फिल्म 'गाँधी', प्रकाश झा की फिल्म दामूल, भोजपुरी फिल्म हमार देवदास, लागल नथुनिया के धक्का, लखैरा, श्याम बेनेगल के धारावाहिक -डिस्कवरी ऑफ इन्डिया से जुड़े। कला-संगम, बिहार आर्ट थियेटर के बाद सन् 1990 में कला-जागरण की स्थापना कर कला के क्षेत्र में इनकी तीव्रता और भी बढ़ गयी। सैकड़ों नाटकों में अभिनय के बाद वे वर्तमान युवा पीढ़ी की नाट्य कला को निखारने में लग गये हैं। श्री कुमार बिहार आर्ट थियेटर प्रशिक्षणालय के आमंत्रित शिक्षक भी हैं। इनके निर्देशन में तैयार महत्वपूर्ण नाटक हैं-सजा, डायन, फंसरी, आउ झोपड़ी सुलग गेल, अंधा युग, कारागार, सिकन्दर-पोरस, बन्द कमरे की आत्मा, बाबू जी का पासबुक, कालसर्पिणी, गोपा, पीरअली, आदि। अपने देश की विरासत ऐतिहासिक घटनाओं को आज की युवा पीढ़ी तक सजीव बनाये रखने के उद्देश्य से डॉ॰ चतुर्भुज की स्मृति में ऐतिहासिक नाट्योत्सव सन् 2010 से प्रारम्भ करने का एक क्रांतिकारी कदम सुमन कुमार का रहा है। सन् 2011 में इस नाट्योत्सव को विस्तार देकर अखिल भारतीय स्तर का बनाया जाना इनका सराहनीय कदम माना जायेगा। सन् 2014 में बिहार सरकार द्वारा वरिष्ठ रंगकर्मी के लिए सम्मानित हुए। सन् 2016 में इन्हें 'प्रांगण' नाट्य संस्था की ओर से पाटलिपुत्र अवार्ड से विभूषित किया गया।

डॉ॰ अशोक प्रियदर्शी

सचिव, मगध कलाकार, पटना

09334525657

डॉ॰ चतुर्भुज द्वारा 1952 ई॰ में स्थापित नाट्य संस्था-'मगध कलाकार' के सचिव पद (सन् 1970 ई॰ से) को गौरवान्वित करने वाले डॉ॰ अशोक प्रियदर्शी लेखन, अभिनय, निर्देशन, पत्रकारिता आदि विद्याओं से जुड़े रहे। सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, बिहार सरकार, पटना में सेवा करते हुए इन्होंने राज्य सरकार के महत्त्वपूर्ण आयोजनों का मंच संचालन किया। विशेष रूप से पटना के गाँधी मैदान में स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस जैसे राष्ट्रीय आयोजनों में डॉ॰ प्रियदर्शी की आलंकारिक उद्घोषणा पिछले 20 वर्षों से दर्शकों के बीच चिर-परिचित बनी रही है। बिहार में नाट्य प्रदर्शन को मनोरंजन कर से मुक्त कराने में, नाटक को रोजी-रोटी से जोड़ने के लिए ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में एम.ए. स्तर पर नाट्य शास्त्र विषय की पढ़ाई शुरू कराने में, प्रधानमंत्री बाढ़ राहत कोष, राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में राशि एकत्र कराने आदि में मगध कलाकार के सचिव की हैसियत से नाटककार डॉ॰ चतुर्भुज के कष्ट-साध्य प्रयास में डॉ. अशोक प्रियदर्शी एक महत्त्वपूर्ण सहयोगी बने रहे। रेडियो, दूरदर्शन, पटना से इनके लिखे कई नाटकों का प्रसारण के साथ सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के मंच से डॉ॰ प्रियदर्शी लिखित क्रान्तिकारी सुभाष, डोमकच, खुदीराम बोस, जैसे नाटकों का मंचन किया गया। डॉ॰ चतुर्भुज के सम्पूर्ण रंगमंचीय नाटकों का संकलन तीन खंडों में चतुर्भुज रचनावली के नाम से सम्पादन और डॉ॰ चतुर्भुज की आत्मकथा-'मेरी रंगयात्रा का प्रकाशन डॉ॰ प्रियदर्शी ने अपने सम्पादन में किया है। दिसम्बर, 2012 में सरकारी सेवानिवृत्ति। 2010 से डॉ॰ चतुर्भुज की स्मृति में आयोजित अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव में डॉ॰ प्रियदर्शी, वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार के सहयोगी बन कर कदम से कदम मिला कर आगे बढ़ रहे हैं। बिहार आर्ट थिएटर प्रशिक्षणालय के आमंत्रित शिक्षक डॉ. प्रियदर्शी इन दिनों मासिक पत्रिका 'राजनीति चाणक्य' को युवा पीढ़ी के बीच लोकप्रिय बनाने में संलग्न हैं।

आयोजन समिति के सदस्य : गणेश सिन्हा, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, डॉ॰ मिथिलेश कुमारी मिश्र, डॉ॰ शैलेश्वर सती प्रसाद, डॉ॰ किशोर सिन्हा, रमेश सिंह, प्राणशु, जगदीश दयानिधि, कुमार कश्यप, नीलम सिंह, सुनील कुमार सिन्हा, मदन शर्मा, शिवशंकर रत्नाकर, कृष्ण मोहन प्रसाद, मनोरमा देवी, आदिल रशीद, रोहित कुमार, कुमार अनुपम, कुमार आर्यदेव, कन्हैया प्रसाद, नीलेश्वर मिश्रा, शीलभद्र, हीरालाल, राजीव रंजन श्रीवास्तव, राजेश शुक्ला, फकीर मुहम्मद, किरण कुमारी, प्रेक्षा, प्रशस्ति, अनिमा, तूलिका, निधि, सुशील शर्मा, अनीस अंकुर, यामिनी, विजय कुमार, विशाल तिवारी, सुजीत कुमार, राजकुमार सिंह, सुमन पटेल, धर्मेश मेहता, जय प्रकाश, तनुष्का राय, रीना कुमारी, साहिल सिंह, अरविन्द सिंह, सुनीता भारती, विशाखा इत्यादि।

Scanned by CamScanner

अपनी आत्मकथा –'मेरी रंगयात्रा' में ऐतिहासिक नाटककार डॉ0 चतुर्भुज ने अपने संघर्षमय जीवन का खुले दिल से उल्लेख किया है। आर्थिक विपन्नता, दकियानूसी विचार वाले समाज में जीवन जीते हुए नाटक और रंगमंच के प्रति उनका झुकाव सदैव बना रहा। प्रस्तुत है यहाँ उस पुस्तक से लिए गये कुछ अंश। –सम्पादक

मंचीय आचार संहिता

– डॉ. चतुर्भुज

मंचीय आचार-संहिता को 'स्टेज एथिक्स' भी कहते हैं। जिस तरह किसी परिवार में, राजनीतिक दल में या किसी संस्था में कुछ निर्देशों की आवयकता होती है, उसी तरह रंगमंच के लिए भी कुछ आवश्यक निर्देश हैं जिन्हें हम ''मंचीय आचार संहिता'' कहते हैं। प्रसिद्ध रूसी कलाकार स्टैनिस्लावस्की ने अपना पूरा जीवन रंगमंच की सेवा में लगाया था। उसके अनुसार भूमिकाएं छोटी नहीं होतीं, बल्कि कलाकार छोटा होता है और सृजनात्मक कला की अवहेलना थियेटर के प्रति एक अपराध है।

हर रंगकर्मी मंचन के दौरान, रिहर्सल के दौरान, कुछ-न-कुछ सीखता है। बात मामूली होती है, लेकिन वह बात चाहे तो नाटक की सफलता में चार चांद लगाती है, चाहे बड़े से बड़े नाटक को गर्त में ले जाती है। अपने 50 वर्ष से ऊपर के रंगकर्म से ऐसी अनेक मामूली पर महत्वपूर्ण बातें मेरे सामने आई। उनमें से कुछ की चर्चा उचित होगी क्योंकि इन बातों की जानकारी लिखित रूप में कहीं नहीं मिलती। अनुभव के बल पर और रंगमंच के आज की कुछ समस्याओं को देखकर 'मंचीय आचार-संहिता' को तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है-

(क) थियेटर में कलाकार का व्यवहार।

(ख) थियेटर के बाद कलाकार का व्यवहार

(ग) कलाकार और प्रबंधकों का संबन्ध।

1. जहाँ हम नाटक अभिनीत करते हैं और जहाँ दर्शक बैठते हैं, वह स्थल कलाकारों के लिए मंदिर के समान पवित्र है। जिस तरह हम मंदिर में फिजूल की बातचीत, ईर्ष्या-द्वेश की भावना, स्वार्थ और दूसरों पर दोषारोपण आदि को छोड़कर पवित्र मन से प्रवेश करते हैं और पूजा-अर्चना करते हैं, उसी तरह हमें थियेटर में भी उदात्त भावनाओं को लेकर जाना चाहिए।

थियेटर में कोई आदमी अकेला काम नहीं करता। नाटक की सफलता सामूहिक और समन्वित प्रयास पर निर्भर करती है। अगर कोई कलाकार सिर्फ अपने अभिनय कौशल से सफल होना मानता है तो यह उसका बहुत बड़ा भ्रम है। उसकी सफलता में मेकअप मैन, लाइट मैन, माइक मैंन, ड्रेस मैन और प्रेक्षागृह के व्यवस्थापकों का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। उसके साथ काम करने वाले कलाकारों का भी योगदान रहता है। इसलिए उस कलाकार को यह देखना चाहिए कि उसके साथ-साथ अन्य लोगों का भी कहां तक हित-अहित हो रहा है। हर कलाकार चाहता है कि उसे काम करने की पूरी सुविधा मिले और दर्शक नाटक को सराहे। इसलिए यह आवश्यक है कि अपने में कला को ढूँढ़िए, न कि कला आपके भीतर कुछ ढूँढ़े।

रिहर्सल के दौरान ऐसा पाया जाता है कि कोई-कोई कलाकार अपनी पूर्व प्रशंसा के आधार पर सबकी अवहेलना करता है। यहां तक कि वह निर्देशक से भी उलझ जाता है। रिहर्सल में देर से आता है और पहले चला जाता है। ऐसा कलाकार अपना, उस संस्था का, उस नाटक का तथा अपने साथियों का अहित ही करता है। साथ ही नाटक में उपद्रव की स्थिति उत्पन्न करता है। वैसे कलाकारों से सावधान रहना चाहिए।

कभी कभी ऐसा देखा जाता है कि व्यक्तिगत विरोध के कारण एक कलाकार दूसरे कलाकार से बात नहीं करता है। अगर कुछ कहना होता है तो वह तीसरे कलाकार से कहलवाता है। इसलिए यह अनिवार्य है कि कलाकार रिहर्सल में खुले दिल और पूरे उत्साह से जाए। अगर रिहर्सल का वातावरण बोझिल हुआ, निरर्थक बहस चलती रही, नोक-झोंक का बाजार गर्म रहा तो ऐसे नाटक की सफलता में शत-प्रतिशत संदेह है। अगर ऐसा नाटक मंच पर सफल भी हो गया तो यह इत्तेफाक ही कहा जाएगा।

Scanned by CamScanner

2. रिहर्सल के बाद या स्टेज के बाहर कलाकारों का व्यवहार उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना रिहर्सल के दौरान या मंचन के समय है। दर्शक हमें बड़े सम्मान की दृष्टि से देखते हैं चाहे हम भूमिका कुछ भी करते हों-यह हमें कभी नहीं भूलना चाहिए। इस मर्यादा को बनाए रखना हमारा कर्त्तव्य है। हम बाहरी आदमियों के सामने न तो सहयोगी कलाकारों की टीका-टिप्पणी करें और न तो उनकी शिकायत करें क्योंकि उसका 'चेन रियेक्शन' हो सकता है। यह थियेटर के लिए घातक है।

ऐसा पाया जाता है कि कुछ वरिष्ठ कलाकार अपने से छोटे कलाकार की उसकी छोटी सी भूल के लिए भी भर्त्सना करते हैं। इससे उस छोटे कलाकार में बड़े कलाकार के प्रति घृणा की भावना घर कर जाती है। उसके प्रति वह आदरभाव खो देता है। छोटे कलाकार का आत्मसम्मान आहत होता है और सीखने की प्रवृत्ति उसमें समाप्त हो जाती है। वरिष्ठ कलाकार अपने को 'वरिष्ठ' कहकर सम्मान नहीं पा सकता। उसका आचरण, व्यवहार और बातचीत ऐसी होनी चाहिए कि लोग उसका सम्मान करें। सम्मान मांगा नहीं जाता, प्राप्त किया जाता है। यदि आप दूसरे को सम्मान नहीं देंगे, स्नेह नहीं देंगे तो आप भी सम्मान और श्रद्धा के अधिकारी नहीं हो सकते। इसलिए एक वरिष्ठ कलाकार को चाहिए कि अपने से छोटे कलाकार को छोटे भाई का स्नेह दे।

कलाकार अपनी अभिनय क्षमता के द्वारा दर्शकों को मुग्ध करने की पूरी चेष्टा करता है। दर्शक वर्ग भी नाटक का एक अनिवार्य अंग है। जब कोई दर्शक प्रेक्षागृह में प्रवेश करता है तो उसकी कई इच्छाएं होती हैं। उसका आदर हो, उसे बैठने के लिए उपयुक्त स्थान मिले, उसके आसपास का वातावरण सुखकर हो आदि-आदि।

कलाकार जो मंच पर अभिनय करता है, उसे भी कई सुविधाओं की आवश्यकता होती है। इसलिए हर थियेटर या नाटक दल में कुछ व्यक्ति ऐसे होने चाहिएं जो इन सुविधाओं को मुहैया कराने के लिए मुस्तैद रहें। मंच पर काम करने वाले कलाकारों को ऐसे कामों में लगाने से उनका ध्यान भंग होगा। इसलिए ऐसे कामों के लिए अलग टीम होनी चाहिए।

प्रेक्षागृह में ऐसे व्यक्तियों का होना आवश्यक है जो दर्शकों को देखते ही उन्हें उचित स्थान पर बैठा दें। दर्शकदीर्घा पर उनका नियंत्रण होना चाहिए कि कौन व्यक्ति कहां बैठेगा, बच्चे कहां बैठेंगे, महिलाएं कहां बैठेंगी। अगर नाटक टिकट पर है तो ऐसी जानकारी स्पष्ट हो कि टिकट कहां मिलेगा।

जिस-तरह प्रेक्षागृह का नियंत्रण आवश्यक है, उसी तरह स्टेज और ग्रीनरूम में भी यह व्यवस्था हो कि वहां अनावश्यक भीड़ नहीं हो। पीने के लिए, हाथ-मुंह धोने के लिए पानी, साबुन, तौलिया आदि जरूरी हैं। हर कलाकार को यह मालूम होना चाहिए कि उसके द्वारा उपयोग में लानेवाली पोशाक और अन्य चीजें कहां हैं और कैसे मिलेंगी। रंगमंच पर लाईट कौन देगा, माइक कौन कंट्रोल करेगा, मंच को दृश्य के अनुसार कौन सजाएगा, सीन के बाद मंच के सामान को कौन हटाएगा, दो दृश्यों के बीच क्या होगा, प्रौम्पटर कौन है। ऐसी बातों के लिए उचित है कि नाटक के पहले संबद्ध व्यक्तियों की बैठक की जाए और काम का बंटवारा कर दिया जाए। मंचन के कुछ पहले इसका रिहर्सल कर लिया जाए।

नाटक के बाद सभी व्यक्तियों की एक बैठक आवश्यक है जिसमें नाटक मंचन की, तकनीक की और व्यवस्था की खुले हृदय से पूरी समीक्षा की जाए और सारी बातें नोट की जाएं ताकि यदि कुछ कमी रह गई हो तो आगे के प्रदर्शन में उसका ध्यान रखा जाए।

इन सब बातों के अलावा एक और मुद्दे पर ध्यान देना आवश्यक है। अधिकांश संस्थाओं में यह पाया जाता है कि भूमिका करने के लिए तो सभी लोग तैयार मिलते हैं, लेकिन स्टेज के अन्य काम को हीन मानते हैं। उसका परिणाम है कि कम से कम बिहार में न तो कोई निपुण मेकअप मैन है और न कोई थियेटर के लायक लाइटमैन। यदि कम से कम इन दो कामों में कोई दक्षता प्राप्त कर ले तो उसे न आय की कमी रहेगी, न काम की, न प्रतिष्ठा की। ये सब विशेषज्ञों के काम हैं जिनके लिए प्रशिक्षण और अनुभव की आवश्यकता है। स्टेज का हर कलाकार मंचन की हर विधा में चाहकर भी पटु नहीं हो सकता। लेकिन इतना वह जरूर कर सकता है कि हर विधा का कुछ न कुछ ज्ञान संचित कर ले ताकि आड़े वक्त में वह ज्ञान काम आए। मेरा तो यह मानना है कि कलाकार बनने से अधिक कठिन काम है स्टेज के तकनीकी कामों को जानना। इस पर ध्यान देना आवश्यक है।

अपने दीर्घ जीवन के इस पड़ाव पर आज भी एक बात कचोटती है। नाटक के लिए जितना कुछ करना चाहता था, नहीं कर सका। चाहता था कि जैसा विदेशों में लोग थियेटर से रोजी रोटी कमा रहे हैं, थियेटर में ऊंची शिक्षा पा रहे हैं-यहां भी वैसा कुछ कर पाता। लेकिन अधिकारियों की इच्छा शक्ति के अभाव के कारण वैसा न कर सका। जो कर सका वह अकेला ही कर पाया।-शायद आगे की पीढ़ी इसे कर पाए।-यही सोच कर संतोष है।

(डॉ. चतुर्भुज लिखित आत्मकथा-'मेरी रंगयात्रा' से उद्धृत)

Scanned by CamScanner

मगध कलाकार एवं कला-जागरण

द्वारा

डॉ. चतुर्भुज नाट्य-पत्रकारिता सम्मान-2016

रविराज पटेल : एक सांस्कृतिक युवा यायावर

जे.पी. सेनानी और समाजसेवी श्री प्रदीप कुमार पटेल के पुत्र स्वतन्त्र कला-समीक्षक, लेखक और फिल्मकार रविराज पटेल ने संस्कृति, सिनेमा और रंगमंच को अपना रुचिकर विषय बनाया। संवेदनशील युवा संस्कृतिकर्मी के रूप में इनकी पहचान राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बनती गयी। बिहार रंगमंच के वैसे रंगकर्मियों पर इन्होंने शोध किया जो हमारे आधारभूत धरोहर रहे हैं। उनमें चर्चित हैं-स्व. अनिल कुमार मुखर्जी, स्व. डॉ. चतुर्भुज, स्व. प्यारे मोहन सहाय, स्व. शिवेन्द्र सिन्हा, स्व. अजित गांगुली, स्व. डॉ. जितेन्द्र सहाय, स्व. भगवान सिन्हा, स्व. गोपाल शरण, श्री गणेश प्रसाद सिन्हा, आदि। रविराज पटेल के संयोजन में भोजपुरी सिनेमा के स्वर्णिम वर्ष पर पटना में सात दिवसीय ''भोजपुरी फिल्म महोत्सव'' आयोजित किया गया। इस मुहिम को गति प्रदान करने हेतु इन्होंने 'सिनेयात्रा' संस्था की स्थापना की। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने बिहार में पहली बार 'सिनेयात्रा फिल्म पुरस्कार समारोह' रवीन्द्र भवन, पटना में आयोजित किया और पद्मश्री शारदा सिन्हा, पद्मश्री उदित नारायण, श्री राकेश पाण्डेय, श्री कुणाल सिंह, श्रीमती दीपा नारायण जैसे कलाकारों को सम्मानित किया। 2015 में नेपाल के विनाशकारी भूकम्प पीड़ितों के सहायतार्थ पटना में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति लब्ध सूफी एवं लोक गायक श्री मामे खान एवं उनके साथी कलाकारों के साथ राजधानी स्थित श्री कृष्ण स्मारक भवन में ''महफिल-ए-सिनेयात्रा-एक बहुरंगी शाम'' और सा रे गा मा फेम केशव त्योहार तथा इंडियन आईडल से चर्चित हुई रितिका राज आदि को ससम्मान मंच प्रदान करते हुए जन्म से दृष्टिबाधित बालिकाओं के सहायतार्थ ''द न्यू पटना क्लब' में आयोजित किये गये ''पटना फंट'' जैसे कार्यक्रम आयोजित किया। हाल ही में इन्होंने ''भारत के बाहर एक और बिहार-मेरा मॉरिशस'' नामक वृत चित्र निर्माण की योजना बनाकर त्रिनिदाद, गुयाना, सूरीनाम, फिजी, दक्षिण अफ्रिका के अप्रवासी भारतीयों को अपनी ओर आकृष्ट किया है। इन दिनों श्री रवि पटेल तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय के एस.ए.ई. कॉलेज, जमुई में संगीत विभाग के व्याख्याता के पद को सुशोभित कर रहे हैं।

श्री रविराज पटेल की **प्रकाशित पुस्तकें हैं**- नाटक और रंगमंच, बिहार के सौ रत्न, गंगा मइया तोहे पियरी चढ़ईबो की निर्माण कहानी, भोजपुरी फिल्मों का सफरनामा। **प्रकाशनार्थ पुस्तकें हैं**- बिहार के रंग-नक्षत्रों की यात्रा, मैथिली-मगही फिल्मों का सफरनामा आदि। निम्नलिखित **वृतचित्र के निर्माता-निर्देशक और पटकथा लेखक**- भोजपुरी फिल्मों का पचास साल ''दशा और दिशा'', फिल्म सोसायटीज की पहली नारी 'विजया मुले', पटना कलम 'इंडो ब्रिटिश पेंटिग, बिहार का सिनेमाई सफर, देशभक्ति और मित्रता के मिसाल-बटुकेश्वर दत्त। विदेश यात्रा-रविराज पटेल ने मॉरिशस, दुबई, नेपाल एवं सेशेल्स की भी यात्रा की है। इन दिनों ये सिनेमा विषय के साथ डॉक्टरेट उपाधि हेतु शोधरत हैं।

Scanned by CamScanner

सम्राट अशोक

17 फरवरी (बुधवार), 2016

प्रस्तुति- कला-जागरण, पटना

लेखक- डॉ. सिद्धनाथ कुमार **परिकल्पना/निर्देशक- सुमन**

सुमन कुमार, निर्देशक- सुमन कुमार, निर्देशक– 15 सितम्बर 1947 को जन्म लेने वाले सुमन कुमार 1962 से रंगमंच से जुड़े। 1966 से आकाशवाणी से जुड़ाव हुआ और 37 वर्षों की सेवा के बाद 2007 में वरीय उद्घोषक के पद से सेवानिवृत्त हुए। कई मंचीय नाटकों में अभिनय और निर्देशन। फिल्म-दूरदर्शन से जुड़कर इन्होंने डिस्कवरी ऑफ इंडिया, मिर्जा गालिब, एक कहानी, अधिकार, विद्रोह, दामुल, भीम भवानी, गाँधी, मेहनत और मंजिल, लोहे के पंख, **भोजपुरी फिल्म**- हमार देवदास, बेटी सदा सुहागन रहऽ, लखेरा, सैंया डरायवर बीवी खलासी में अभिनय। बिहार सरकार द्वारा भिखारी ठाकुर शिखर सम्मान (2014), नाट्य भूषण सम्मान (2001-कटक, उड़ीसा), बी॰बी॰सी॰ द्वारा सर्वश्रेष्ठ विज्ञापन प्रस्तुतकर्त्ता सम्मान, पंडारक रंग सम्मान (2011), संस्कार भारती सम्मान (उत्तर प्रदेश), बिहार आर्ट थिएटर सम्मान आदि से सम्मानित।

कथासार- नाटक 'अशोक' मौर्य सम्राट अशोक के जीवन का एक विश्लेषणात्मक चित्रण है, तक्षशिला के प्रशासक 'कुमार अशोक' से 'मगध सम्राट अशोक महान' और फिर अखिल-विश्व में बौद्ध-धर्म के संस्थापक 'प्रियदर्शी अशोक' तक की उसकी यात्रा एक साधारण से महत्वाकांक्षी युवक के राज्यारोहण की कहानी मात्र नहीं है; बल्कि यह एक ऐसे महान व्यक्तित्व का निरूपण है जो महत्वाकांक्षा के पथ पर हिंसा-अहिंसा, नैतिकता-अनैतिकता ओर सत्-असत के बीच चलते भीषण मानसिक अंतर्द्वन्द्व को संतुलित करता हुआ अपने ईष्ट को साधता और नियति को स्वीकारता है।

इतिहासकारों के अनुसार, मगध-सम्राट अशोक (269-232 ई. पू.) अपने पूर्ववर्ती मौर्य राजाओं की तरह विस्तारवादी और महत्वाकांक्षी शासक था तथा धर्मान्तरण के पूर्व वह एक अतिक्रूर व्यक्ति था ई.पू. 260 में उसने कलिंग युद्ध किया जो मानव जाति के इतिहास के भीषणतम युद्धों में एक माना जाता है। कहा जाता है कि इस युद्ध में मारे गए सैनिकों के रक्त से दया नदी का पानी लाल हो गया था। सम्राट अशोक के शिलालेख भी बतातें हैं कि इस युद्ध में मगध के एक लाख तथा कलिंग के डेढ़ लाख सैनिक मारे गए।

कहा जाता है कि इस युद्ध की वीभत्सता को देखकर सम्राट अशोक जैसे क्रूर शासक का हृदय धर्म और अहिंसा के प्रसार का व्रत लिया। एक मत यह भी है कि उसका विश्व-व्यापी धर्म-अभियान उसकी असीम महत्वाकांक्षा का ही एक उत्परिवर्तित रूप था, जैसा कि इस प्रस्तुति में उसकी प्रेयसी 'देवी' के इस तथ्य से परिलक्षित होता है, कि 'महत्वाकांक्षाएँ मरती नहीं, उनका स्वरूप बदलता है।'

कुछ भी हो, पर सच्चाई तो यही है कि सम्राट अशोक ने अहिंसा और विश्व-शांति के जिस दिव्य अभियान का प्रारंभ किया उसने समस्त विश्व में तथागत के उपदेशों की ज्योति जलाई और हमारा पाटलिपुत्र उस ज्योति-वृत्त का केन्द्र बना।

कलाकार

सम्राट अशोक	आमिर हक	सुसीम	सुधीर कमल
शाक्य कुमार देवी	सुनिता भारती	मुनादी वाला	अमित
बिन्दुसार	सरविनद कुमार	नागरिक-1	चन्दन कुमार रजक
राधगुप्त	रूबेश कुमार	नागरिक-2	सूरज लाल
असंधिमित्रा	प्रीति सिंह	नागरिक-3	परितोष कुमार 'चित्रांश'
कलिंगराज	शंकर सुमन	नागरिक-4	विवेक कुमार
अमात्य	मिथिलेश कुमार सिन्हा	प्रतिहारी	विवेक कुमार, दीपक, खालिद खान
संघमित्रा	नेहा	बौद्ध-भिक्षु	परितोष

Scanned by CamScanner

नेपथ्य

मंच परिकल्पना	प्रदीप गांगुली
मंच सज्जा	अविनाश कुमार, सरविंद कुमार
मंच-निर्माण	हीरा मिस्त्री
सहयोग	संजय, बीरबल, सरफुद्दीन
प्रकाश	उपेन्द्र कुमार, राजकुमार शर्मा
प्रकाश व्यवस्था	संजय वर्णवाल
संगीत निर्देशक	डॉ. किशोर सिन्हा
सहयोग	अरविन्द कुमार
वस्त्र-परिकल्पना	नेहा
सहयोग	सुनिता भारती
वस्त्र निर्माण	मो. सदरुद्दीन
स्प-सज्जा	हीरालाल राय, उपेन्द्र कुमार

प्रस्तुति प्रभारी	रोहित कुमार
मार्गदर्शन	गणेश प्रसाद सिन्हा, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा,
विशेष आभार	डॉ. शंकर सुमन एवं 'पटना- संग्रहालय' परिवार
आभार	सुशील शर्मा, कन्हैया प्रसाद, नीलेश्वर मिश्र, सुषमा सिन्हा, अजय कुमार पाण्डेय, रमेश सिंह, बिहार आर्ट थियेटर परिवार, प्रांगण, बिस्तार, फ्रीडम एवं समस्त रंगकर्मी और मीडिया जगत
सहयोग	अरविन्द कुमार, नीरज बावरिया, नीतीश कुमार, चक्रपाणि पाण्डेय, मधुकांत श्रीवास्तव, राजकुमार 'प्रिंस'

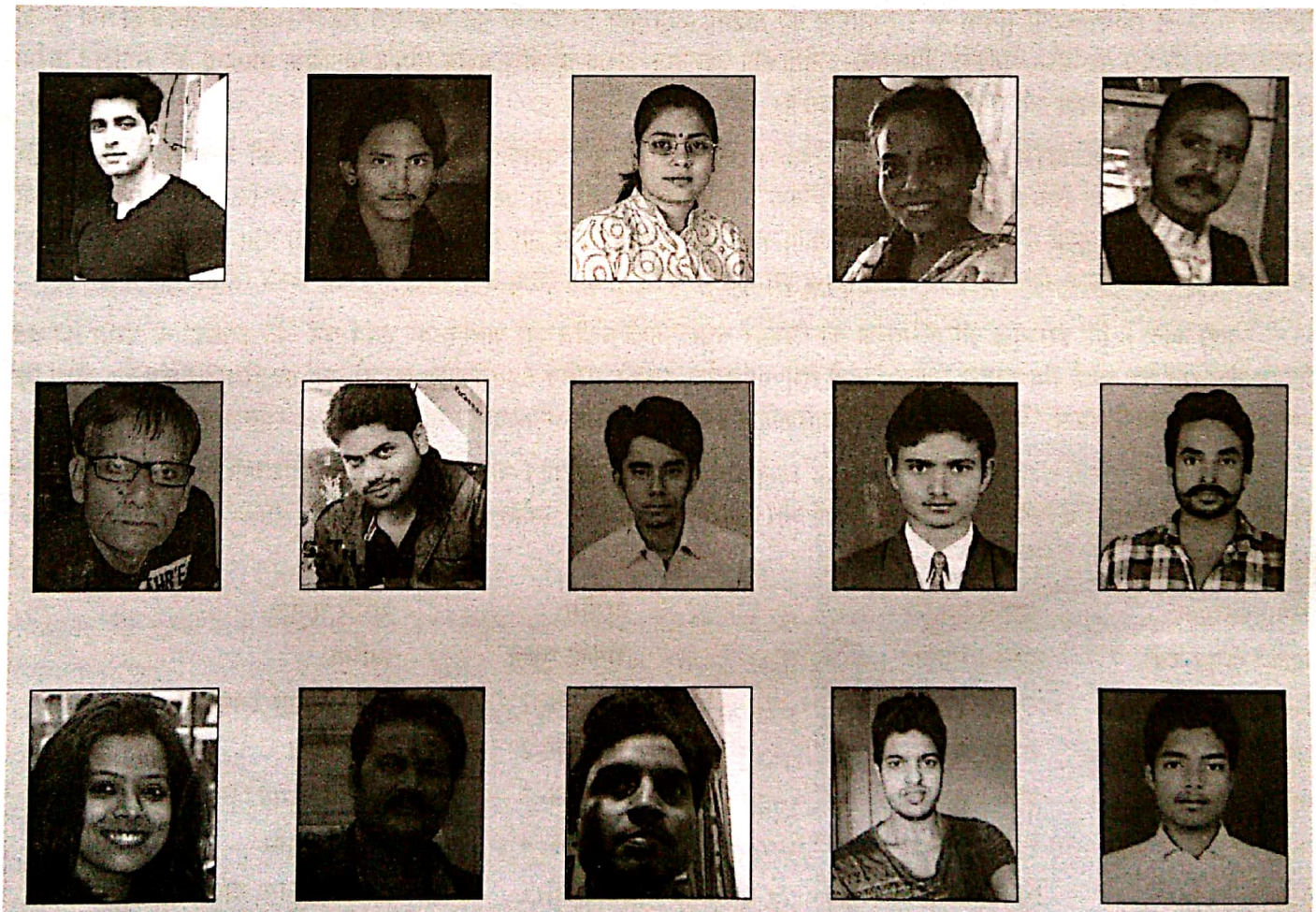

Scanned by CamScanner

SPARTACUS LET'S FIGHT

(कोलकाता)

18 फरवरी (गुरुवार), 2016

प्रस्तुति- कायाडांगा सबुज सांस्कृतिक केन्द्र

SCRIPT WRITING, SCENOGRAPHY, DIRECTION: Rajesh Debnath

SYNOPSIS OF
SPARTACUS LET'S FIGHT

The slave-leader Spartacus fought for the liberty of his people, the revolt which was subdued by Crassus. From that day forth, Spartacus became the symbol of revolution.

Time has changed. Seems like we have an abundance of Crassuses around us and lack of a true Spartacus amongst us. Isn't Crassus himself a slave? A slave to power! It is a very confusing task to determine who the master is and who the slave. Who are we, in fact? What are we hiding from ourselves? Our real face? What we need today is a warrior - one who has learnt to oppose and fight against all odds, even if it be himself; one who unlike the joker dose not hide behind the pretentious mask of kindness and simplicity. And, on this path of discovery, we suddenly find ourselves facing a mirror. Who is responsible? Who is Spartacus? Who is Crassus? Not us.....or, is it?

CREDITS:

Production	:	Kayadanga SABUJ SANSKRITIC KENDRA
MUSIC DIRECTION	:	Nabamita Ghosh
PLAYBACK	:	Nabamita Ghosh, Souvik Bhatta
MUSIC HANDS	:	Debanjan Datta, Arijit Sengupta
LYRICS	:	Rajesh Debnath, Nabamita Ghosh, Souvik Bhatta
RECORDING SOUND CONTROL	:	Souvik Modak
CHOREOGRAPHY	:	Raktim Goswami, Panna Mandol, Rajesh Debnath, Bhatta
COSTUME DESIGN	:	Rajesh Debnath
COSTUME MAKING	:	Souvik Modak
VIDEOGRAPHY	:	Subhadeep Auddy
LIGHT & STAGE DESIGN	:	Rajesh Debnath p

Scanned by CamScanner

मीरकासिम

19 फरवरी (शुक्रवार), 2016

प्रस्तुति- पुण्यार्क कला निकेतन, पंडारक, पटना

लेखक- डॉ. चतुर्भुज

निर्देशक- विजय आनन्द

सह-निर्देशक- रविशंकर कुमार

निर्देशक- बिहार कलाश्री से अलंकृत निर्देशक विजय आनन्द ने रेलवे की सेवा करते हुए 1996 से अपनी रंग-यात्रा प्रारम्भ की। निर्माण कला मंच, इप्टा, प्राची थियेटर यूनिट, किरण कला निकेतन, पुण्यार्क कला निकेतन और कला मंच के नाटकों में भूमिकाएं की। साथ ही कई नाटकों का निर्देशन भी किया। प्रमुख निर्देशित नाटक हैं-आसमान जोगी, वंदेमातरम्, बिदेसिया, गबर घिचोर, हारा हुआ सिकन्दर, मेघनाद, शीरी-फरहाद, हीर-रांझा, उमराँवजान, बड़ा नटकिया कौन आदि।

कथावस्तु- अंगरेजों ने "फूट डालो-शासन करो" की नीति अपनाकर 1757 में सिराजुद्दौला को पलासी के युद्ध में पराजित कर उसके सिपहसालार मीरजाफर को बंगाल-बिहार-उड़ीसा का नवाब बनाया था। नवाब बनने के बाद जब मीरजाफर ने मुर्शिदाबाद में अंगरेजों की किला-बन्दी पर रोक लगाई तब उसने मीरजाफर को पदच्युत कर, उसके दामाद मीरकासिम को नया नवाब बनाया। उस समय अंगरेजों और फ्रांसिसियों के बीच आपसी प्रतिद्वन्द्विता कायम थी। मीरकासिम अंगरेजों की कूटनीति से पूर्व परिचित था। अंगरेजों के चंगुल से दूर रहने के उद्देश्य से उसने मुर्शिदाबाद से अपनी राजधानी हटा कर मुँगेर को अपनी नई राजधानी बनाया। अंगरेज उसकी नीति को समझ गये। मीरकासिम के विरूद्ध उसने षडयन्त्र का बीज बोया। मीरकासिम के सिपहसालारों को प्रलोभन देकर अंगरेजों ने 1764 के बक्सर युद्ध में उसे पराजित किया। इस नाटक में अंगरेजों और फ्रांसिसियों की आपसी प्रतिद्वन्द्विता और कूटनीति को भी दर्शाया गया है।

कलाकार-

मीरकासिम	-	रविशंकर कुमार
मीरजाफर	-	राजेश कुमार
एलिस	-	दिनेश कुमार
तकी खाँ	-	नन्दन कुमार
गुरगन	-	अजय कुमार
आडम्स	-	विजय आनन्द
सौम्बर	-	राकेश कुमार (डबलू)
नागरिक-	-	सुमन कुमार, उमेश कुमार, आनन्द कुमार, आशीष कुमार, रविशंकर कुमार, सौरव
अमयाट	-	कुन्दन कुमार गुप्ता
जरीना	-	वीणा गुप्ता
मेक-अप	-	ब्लु आनन्द
वस्त्र	-	मनोज कुमार सिंह, नरेश सिंह

Scanned by CamScanner

चाणक्य

20 फरवरी (शनिवार), 2016

प्रस्तुति- आकाश गंगा रंग चौपाल एसोसिएशन, बरौनी (बेगूसराय)

लेखक-निर्देशक एवं प्रकाश परिकल्पना- गणेश प्रसाद

निर्देशक- आचार्य चाणक्य राजनीति, कूटनीति, ज्योतिष, दर्शन, अर्थशास्त्र, रसायन शास्त्र और शस्त्र विधा सहित अनेक विषयों के धुरंधर थे। आज के भारत के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलनों में चाणक्य कहीं गहराई से हमारे बीच उपस्थित है। वर्तमान समय में जब मानव भौतिक संसाधनों और टेक्नोलॉजी का गुलाम होते जा रहा है, स्वयं का अस्तित्व खोकर मशीन बनते जा रहा है। इंसानियत और मानवता की जगह दानवता ने ले ली है। पूरी दुनिया नक्सलवाद, आतंकवाद, हत्या, बलात्कार, खूनी हिंसा की चपेट में आकर बर्बाद हो रही है। पूरा विश्व बारूदों की ढेर पर बैठा हुआ है, एक देश दूसरे को राजनीतिक, कूटनीतिक पटकनी दे विश्व का बादशाह बनना चाहता है। ऐसे में हमें एक बार फिर से चाणक्य की जरूरत है जिसने मानव इतिहास में पहली बार राष्ट्र के स्वरूप का निर्धारण किया।

कथावस्तु- चाणक्य एक ऐसा नाम है जिसे सुनते ही एक राजनीतिक, कूटनीतिक, दर्शन, ज्योतिष एवं अर्थ शास्त्री आदि की छवि सामने आती है। चाणक्य को केन्द्र में रखकर अनेक साहित्यकारों, नाटककारों ने नाटकों आदि की रचना प्रस्तुति की। चाणक्य ने नंद वश को नाश करने का शपथ ले रखा था। फिर चन्द्रगुप्त को राजा बनाने पर ही वह केन्द्रित रहा। सच भी है कि राजनीतिक विचारक के रूप में वे ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने मानव इतिहास में पहली बार राष्ट्र के स्वरूप की कल्पना की। उनके समय में भारत वर्ष कई राज्यों में विभाजित था। उन्होंने सभी राज्यों को केन्द्रीय शासन के अधीन लाकर आर्यावर्त नामक एक राष्ट्र को जन्म दिया जो बाद में भारत कहलाया।

विश्व के प्रमुख राजनीतिक चिंतकों में आचार्य चाणक्य के महान जीवन संघर्ष में एक आम इंसान के रूप में चाणक्य के अंतर्मन को प्रस्तुत करना ही इस नाटय प्रस्तुति का उद्देश्य है-

कलाकार-

चाणक्य-1	-	आलोक रंजन
चाणक्य-2	-	सुजीत कुमार
अमात्य राक्षस	-	देवानंद
चन्द्रगुप्त	-	रोहित वर्मा
सुवासिनी	-	चांदनी/अंजनी
सूत्रधार	-	राधे कुमार
सूत्रधार	-	राहुल कुमार
सूत्रधार	-	मनीष कुमार
सूत्रधार	-	रूपेश कुमार
सूत्रधार	-	कुन्दन कुमार

मंच परे-

नाट्य परामर्श	-	सुमन कुमार
रूप सज्जा	-	मनीष कुमार
वस्त्र सज्जा	-	राधे/चांदनी
संगीत संचालन	-	नरेश कुमार
मंच प्रबंधक	-	मनीष कुमार
प्रस्तुति प्रबंधक	-	शम्भू साह
मंच सामग्री	-	अंकित वर्मा/राहुल कुमार

Scanned by CamScanner

बहुराज्यीय सहकारी भूमि विकास बैंक सीमित

बुद्ध मार्ग, पटना-800 001

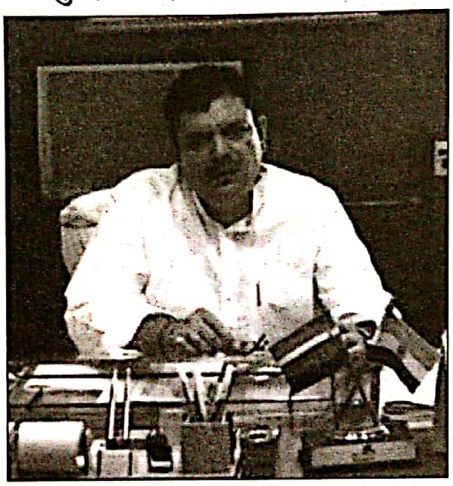

श्री विजय कुमार सिंह,

अध्यक्ष की अध्यक्षता में निरन्तर
प्रगति की ओर....

- इस बैंक की स्थापना 18.12.1957 में हुई थी।
- इस बैंक का निबंधन मल्टी स्टेट को-ऑपरेटिव सुसाइटीज एक्ट 2002 की धारा 103 के अंतर्गत किया गया है।
- गाँव के किसानों, छोटे-छोटे उद्यमियों, कारीगरों, ट्रांसपोर्टरों को सदस्य बनाकर ऋण मुहैया कराना इस बैंक का मुख्य उद्देश्य है।
- इच्छुक व्यक्ति बैंक की सदस्यता ग्रहण कर इसके द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए आगे आकर बिहार एवं झारखंड राज्य के विकास में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें।

Scanned by CamScanner

1960 से आपकी सेवा में

पाटलिपुत्र सेन्ट्रल को–ऑपरेटिव बैंक लि., पटना

आर.बी.आई. लाइसेंस सं.–ग्रा.आ. ऋण वि.डी. सी.सी.बी./पैट–02/2009–10

मदनधारी भवन, एस.पी. वर्मा रोड, पटना–800 001

यह बैंक बी.आर. एक्ट. के प्रावधानों के अन्तर्गत 369.85 करोड़ कार्यशील पूंजी के साथ पटना जिले में 20 शाखाओं के माध्यम से ग्राहकों को निरंतर सम्पूर्ण बैंकिंग सेवा प्रदान कर रहा है। गत वर्षों की उपलब्धि आँकड़ों में–

क्र.	विवरण	31.03.10	31.03.11	31.03.12	31.03.13	31.03.14	31.03.15
1.	हिस्सा पूँजी	4.61 करोड़	5.07 करोड़	5.53 करोड़	5.53 करोड़	5.56 करोड़	6.02 करोड़
2.	संचित कोष	18.28 करोड़	20.78 करोड़	24.02 करोड	24.15 करोड़	24.38 करोड़	24.55 करोड़
3.	जमा	214.31 करोड़	214.03 करोड़	238.62 करोड़	266.25 करोड़	241.00 करोड़	274.48 करोड़
4.	निवेश	198.40 करोड़	184.35 करोड़	212.08 करोड़	200.64 करोड़	170.56 करोड़	198.44 करोड़
5.	ऋण एवं अग्रिम	30.08 करोड़	35.20 करोड़	40.98 करोड़	68.72 करोड़	68.61 करोड़	76.70 करोड़

विशेष योजनाएँ:–

1. ATM/KCC कार्ड से खरीदारी की सुविधा। 2. RTGS/NEFT की सुविधा।
3. DBT की सुविधा।
4. जमा बीमा योजना के अन्तर्गत ग्राहकों की जमा राशि सुरक्षित।
5. मात्र 4 प्रतिशत ब्याज दर पर कृषक सदस्यों को किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से दो लाख रुपये तक कृषि ऋण की सुविधा।
6. किसान क्रेडिट कार्ड धारकों के लिए अल्प प्रीमियम पर व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा की सुविधा।
7. कृषकों के लिए फसल बीमा की सुविधा।
8. ग्राहकों के लिए आवास, कार, व्यक्तिगत आदि अनेक प्रकार की ऋण की सुविधा।
9. बाँकीपुर, मसौढ़ी एवं बाढ़ शाखा में लॉकर की सुविधा।
10. AEGON-RELIGARE के माध्यम से जीवन बीमा की सुविधा।
11. चयनित 100 पैक्सों में POS मशीन (MicroATM) के माध्यम से लेन–देन की सुविधा।
12. मोबाईल ATM वैन द्वारा गाँव–गाँव में, ATM के माध्यम से लेन–देन करने हेतु प्रशिक्षण की सुविधा।
13. गाँव के हर व्यक्ति तक बैंक की सुविधा पहुँचाने के उद्देश्य हेतु दानापुर, मसौढ़ी एवं बाढ़ में नवार्ड के सहयोग से FLC केन्द्र की स्थापना।

सैयद मसरूक आलम
प्रबंध निदेशक

अशोक कुमार
अध्यक्ष

Scanned by CamScanner

1914 से विश्वास का प्रतीक

बिहार राज्य सहकारी बैंक लि.

The Bihar State Co-operative Bank Ltd.

ASHOK RAJPATH, PATNA-800 004
Phone : 0612-3298351, 3298350, 3298024, EPBX : 2300364, 2300324
Fax : 2300262, 2300662, Telegram : "APEXCOBANK" PATNA

Ref. No. ..... *Date*.....

हमारी विशेषताएँ

1. 100 वर्षों से अधिक से बिहार राज्य के कृषकों एवं ग्राहकों को विनम्र सेवा में समर्पित।
2. बिहार के सभी बैंकों से जमा-साख अनुपात सबसे अधिक।
3. सभी प्रकार की बैंकिंग सेवायें यथा- जमा, ऋण वितरण, डी०डी० निर्गमन, साख पत्र, बैंक गारंटी, बिल कलेक्शन आदि की सुविधायें उपलब्ध।
4. भारतीय रिजर्व बैंक एवं नाबार्ड के पूर्ण नियंत्रणाधीन।
5. सभी शाखाएँ कोर बैंकिंग से सम्बद्ध एवं RTGS/NEFT की सुविधा उपलब्ध।
6. ए.टी.एम., रूपे कार्ड, ई-कामर्स की सुविधा उपलब्ध।
7. निकट भविष्य में नेट बैंकिंग, मोबाईल बैंकिंग की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु कार्रवाई जारी।
8. अन्य व्यवसायिक बैंकों की तुलना में आकर्षक ब्याज दर एवं वरीय नागरिकों को 0.50% अतिरिक्त ब्याज दर की सुविधा उपलब्ध।
9. छोटे व्यापारियों के लिए आकर्षक दैनिक जमा योजना की सुविधा।

विस्तृत जानकारी के लिए निम्न शाखाओं से सम्पर्क करें :-

पटना स्थित शाखायें :— बाँकीपुर, नया सचिवालय, न्यू मार्केट, कंकड़बाग, नाला रोड, मुसल्लहपुर हाट एवं मौर्या लोक शाखा।

अन्य शहरों में शाखायें :— मोतिहारी, बिहट (बरौनी), छपरा एवं दरभंगा।

हमारा लक्ष्य
सशक्त सहकारिता, समृद्ध बिहार

(कुमार शान्त रक्षित)
प्रबंध निदेशक

(रमेश चन्द्र चौबे)
अध्यक्ष

Scanned by CamScanner

With Best Compliments

MAHESHWARI BOOK DISTRIBUTORS

Kunj Lal Street
Upper Bazar
Ranchi

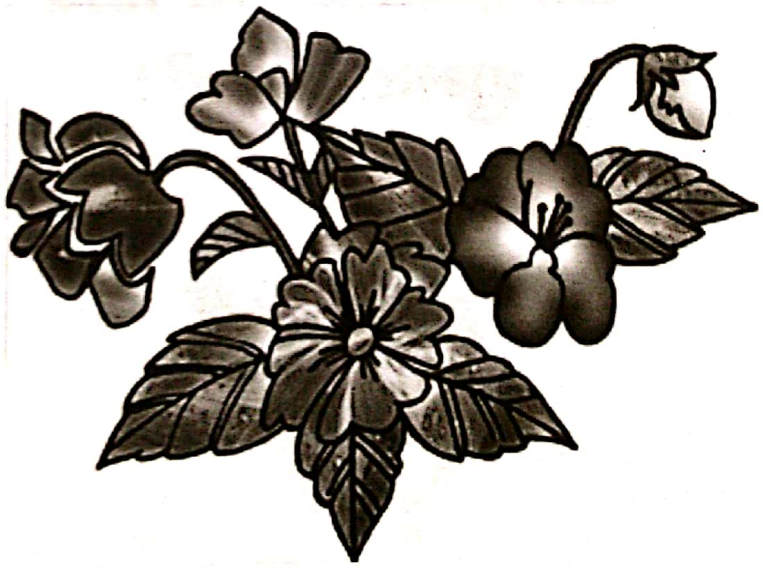

Regards
Shyam Maheshwari
9835115985

Scanned by CamScanner

स्थापित- 2011

निबंधन संख्या 914/पटना/3.11.15

चमन वेलफेयर ट्रस्ट

की ओर से

सातवें अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव-२०१६

की सफलता के लिए शुभकामनाएँ।

Website : Chamanwelfaretrust.org.
Email : Chamanwelfaretrust@gmail.com

106, श्रीकृष्ण नगर,
पटना-800001 (बिहार)

Scanned by CamScanner

डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में मगध कलाकार और कला-जागरण द्वारा आयोजित ऐतिहासिक नाट्य समारोह में नाट्य-प्रस्तुतियाँ

1 से 5 फरवरी, 2010

1/2/10	शेरशाह सूरी, पटना
2/2/10	शाही अमानत, पटना
3/2/10	कलिंग-विजय, पंडारक
4/2/10	रावण, सहरसा
5/2/10	पीरअली, पटना

20 से 26 फरवरी, 2011

20/2/11	वीरागंणा, पटना
21/2/11	यहूदी की लड़की, शाहजहाँपुर
22/2/11	कर्ण, पटना
	हिक्की सायबेर गजट, कोलकाता
23/2/11	विशु राउत, भागलपुर
24/2/11	माटी हिन्दुस्तान की, पंडारक
25/2/11	सीता बनवास, पटना
26/2/11	कुँवर सिंह, पटना

8 से 14 फरवरी 2012

8/2/12	उर्वशी, पटना
9/2/12	अपनी कथा कहो बिहार
	हारा हुआ सिकन्दर, पटना
10/2/12	कसम (WASAK), मणिपुर
11/2/12	गोपा, पटना
12/2/12	सत्य हरिश्चन्द्र, पटना
13/2/12	शताब्दी के स्वर
14/2/12	पाटलिपुत्र का राजकुमार, पटना

19 से 25 फरवरी 2013

19/2/13	कर्णभारम, बेगूसराय
19/2/13	उत्तर प्रियदर्शी, पटना
20/2/13	औरंगजेब की आखिरी रात, गुड़गाँव हरियाणा
21/2/13	आम्रपाली, पटना
21/2/13	रश्मिरथी, पण्डारक
22/2/13	चाणक्य, पटना
23/2/13	टीपू सुल्तान, मणिपुर
23/2/13	शॉपग्रस्त, पटना
24/2/13	कारागार, सहरसा

17 से 23 फरवरी 2014

17/2/14	कालिगुला, पटना
18/2/14	तोमार डाके, कोलकाता
19/2/14	काल सर्पिणी, पटना
20/2/14	नवा खोरी चिनाय, मणिपुर
21/2/14	नील कंठ निराला, पटना
22/2/14	मेघनाद, पंडारक
23/2/14	पोरस सिकन्दर, पटना

11 से 17 फरवरी 2015

11 फरवरी 2015	अंधा युग
12 फरवरी 2015	री-एक्सप्लोरेशन
13 फरवरी 2015	लैला मजनूँ
14 फरवरी 2015	भामाशाह
15 फरवरी 2015	सिराजुद्दौला
16 फरवरी 2015	अंगुलीमाल
17 फरवरी 2015	केंग्डू

Scanned by CamScanner

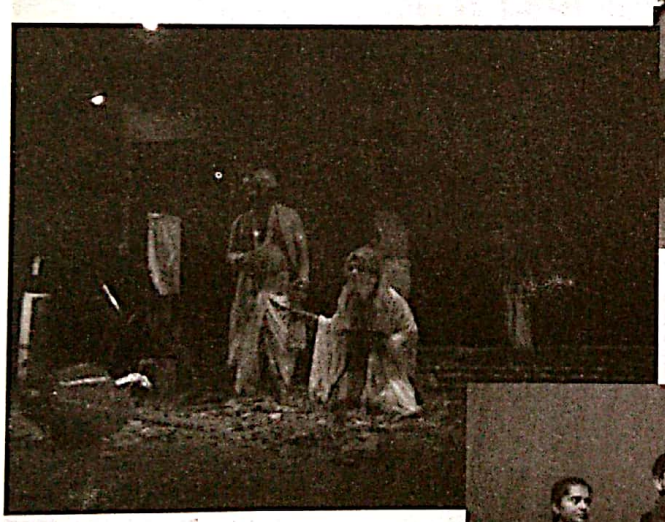

Scanned by CamScanner

अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव, 2015

झलकियाँ

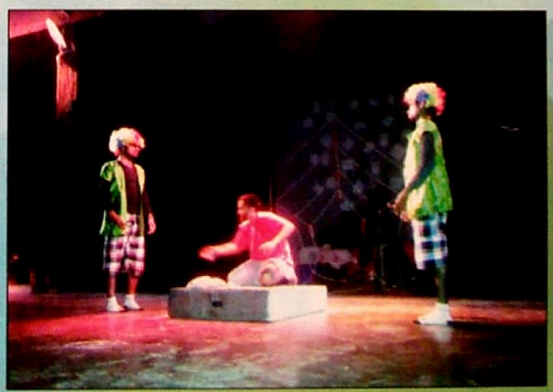

Scanned by CamScanner

वातायन Vatayan # 0612-2222920 # 9431040914

Scanned by CamScanner